मेडेगास्कर-नं० ३५

मेडेगास्कर

के

कुछ प्रसिद्ध लेख

जुलाई १९४२] **देश-दर्शन** [आषाढ़ १९९९

(पुस्तकाकार सचित्र मासिक)

वर्ष ४] **मेडेगास्कर** { संख्या १ / पूर्ण संख्या ३५

सम्पादक

पं० रामनारायण मिश्र, बी० ए०

प्रकाशक

भूगोल कार्यालय, इलाहाबाद

Annual Subs. Rs. 4/-
Foreign Rs. 6/-
This copy As. -/6/-

वार्षिक मूल्य ४)
विदेश में ६)
इस प्रति का ।=)

विषय-सूची

स्थिति तथा विस्तार

यह हिन्द महासागर का एक बड़ा द्वीप है। न्यूगिनी और बोर्नियो को छोड़ कर यह संसार का सबसे बड़ा द्वीप है। यह द्वीप अफ्रीका के दक्षिणी-पूर्वी तट से लगभग ढाई सौ मील की दूरी पर स्थित है। मोजम्बीक प्रणाली अफ्रीका महाद्वीप से इस द्वीप को अलग करती है। उत्तर से दक्षिण तक इस द्वीप की लम्बाई ९०५ मील और पूर्व-पश्चिम की औसत चौड़ाई २५० मील है। बीच वाले भाग में इसकी चौड़ाई लगभग ३६० मील है। इस द्वीप का क्षेत्रफल लगभग २ लाख २८ हजार वर्ग मील है। जो अपने संयुक्त प्रान्त से दुगुना है। यह द्वीप ४४ अंश से ५० अंश पूर्वी देशान्तर और १२ अंश से २५.३५ दक्षिणी अक्षांश के मध्य स्थित है। इसके धुर उत्तर में अम्बेरो अंतरीप और धुर-दक्षिण में सेंट मैरी की अंतरीप है। इस द्वीप के मध्यवर्ती भाग में एक चतुर्भुजाकार पठार है जिसकी ऊँचाई ३००० से ५००० फुट तक है। पठार

के चारों ओर लम्बे चौड़े समतल मैदान हैं। यह मैदान समुद्र के धरातल से ऊँचे हैं। इनके बीच में ऊँचे पठार स्थित हैं।

वर्तमान युद्ध में मेडेगास्कर द्वीप का महत्व और भी अधिक बढ़ गया है। एक प्रकार से हिन्द महासागर की कुञ्जी इसी द्वीप के हाथ में है। इस द्वीप में स्थित डीगो स्वारेज़ और अन्य हवाई स्टेशन बड़े काम के हैं। इसी से सम्भावना थी कि शायद जापान यहाँ अपना अधिकार जमा ले और ब्रिटिश तथा अमरीकन जहाजों का इस ओर आना ही बन्द कर दे। इसी डर से ब्रिटेन ने युद्ध काल के लिये इस द्वीप पर अपना फौजी अधिकार जमा लिया है।

भूरचना

प्राचीन काल (जब कि इस द्वीप की रचना हुई) में मेडेगास्कर अफ्रीका महाद्वीप में मिला हुआ था। इस प्रकार लुप्त गोंडवाना महाद्वीप का यह एक भाग था। परन्तु इसकी सीमावर्ती सेलीज़ आदि द्वीपों की बनावट का अध्ययन करने से पता चलता है कि अति प्राचीन काल में यह उस द्वीप का भाग था जिसे भूगर्भ विद्या के विशेषज्ञ लेमूरिया नाम से पुकारते हैं। लेमूरिया नाम लेमूर से हुआ है। यह अब भी मेडेगास्कर में पाये जाते हैं और भारतवर्ष तक में पाये जाते हैं। कुछ समय के बाद लेमूरिया महाद्वीप समुद्र में डूब गया जिससे भीषण ज्वालामुखी लावा और राख निकल पड़ी। एम्बर और अंकाराट्रा पर्वतों का २००० मील भाग उसी लावा तथा राख की मिट्टी से ढका है। यह प्राचीन आग्नेय भाग द्वीप के पूर्वी केन्द्रीय भाग और पश्चिमी तट पर पाए जाते हैं। इटासी आग्नेय पर्वत अभी हाल का बना हुआ है। रानू-माफाना के थर्मल स्प्रिंग (उष्ण सोते) जैसे एँटसी रेबे आदि बहुत पाये जाते हैं। इस भाग में छोटे भूकम्प बहुधा आया करते हैं।

इस द्वीप की भूमि पथरीली है। लोहा बहुत पाया

जाता है। जो देशी रोजगार में प्रयोग होता है। कुछ सोना भी मिलता है। इस द्वीप की मिट्टी का दो तिहाई भाग ईंट के रंग की मिट्टी का है। ऊँचे पठार इसी मिट्टी से ढके हैं। यह मिट्टी अधिक उपजाऊ नहीं है। इस द्वीप का पश्चिमी भाग प्रस्तरीभूत चट्टानों का बना है। अंटंकारा के पठार चूने के पत्थर, बलुहा पत्थर और जुराज़िक तथा टार्शियरी काल की बनी हुई मिट्टी के बने हैं।

तटीय मैदानों की कछारी भूमि बड़ी उपजाऊ है और टार्शियरी प्रस्तरीभूत चट्टानों वाली भूमि में बनस्पति और जंगल बहुत हैं।
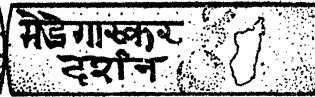
प्राकृतिक बनावट

इस द्वीप का पूर्वी तट लगभग सीधी रेखा बनाता है। पूर्वी तट पर बालू की पहाड़ियां, अनूप और पहाड़ी मैदान पाये जाते हैं। पूर्वी तट पर तोमातावे का मुख्य बन्दरगाह है। यह बन्दरगाह प्रवाल चट्टानों से घिरा हुआ है। पूर्वी तट पर अंटोनगिल उत्तर की ओर खाड़ी है जिस पर लैक्वेज़ का बन्दरगाह है। दक्षिण की ओर डोगा स्वारेज़ की खाड़ी है जिस पर डीगो स्वारेज़ का सुन्दर बन्दरगाह है। मेडेगास्कर के उत्तरी-पश्चिमी तट पर छोटी छोटी बहुत सी खाड़ियां हैं। इस भाग में पर्वत समुद्र के भीतर तक चले गये हैं। इस भाग की अधिकांश खाड़ियां भूमि से घिरी हैं। इसके उत्तरी-पश्चिमी किनारे पर सेंट अंड्रू है। सेंट अंड्रू से ओनीलाही नदी की स्चुअरी या सेंट अगस्टाइन तक समुद्र तट नीचा और समतल है। सेंट अगस्टाइन की खाड़ी दक्षिण-पश्चिम की ओर है। इस द्वीप का दक्षिणी तट ऊँचा है परन्तु उसमें खाड़ियां अथवा अंतरीप नहीं हैं।

इस द्वीप के तटीय द्वीपों में सबसे बड़ा द्वीप स्टेमारी द्वीप है। यह द्वीप उत्तर-पूर्व की ओर स्थित है। इसकी
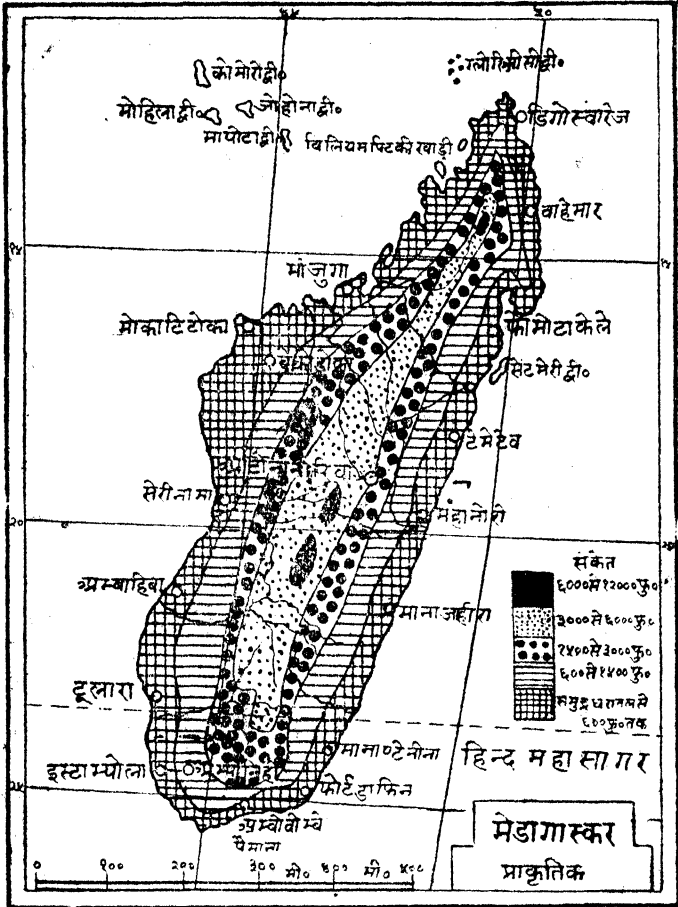
लम्बाई ३५ मील है। उत्तरी-पश्चिमी तट पर अम्पसिंडावा खाड़ी के सामने नोसी-बे द्वीप है। नोसी-बे के उत्तर की ओर मित्रोव द्वीपसमूह है। इसके सिवा दूसरे छोटे छोटे पहाड़ी और प्रवाल द्वीप हैं।

पूर्वी तट के मैदान १० से ५० मील तक चौड़े हैं परन्तु पश्चिमी तटीय मैदानों से भीतर की ओर की भूमि ऊँची होती जाती है। भीतरी पठार की ऊँचाई कई सौ फुट से आरम्भ होती है। पूर्व की ओर मध्यवर्ती भाग में प्राचीन आग्नेय पर्वत अंकाराट्रा स्थित है। यह पर्वत सबसे अधिक ऊँचा है। इसकी तीन चोटियां ७२८४ फुट से ८६३५ फुट तक समुद्र धरातल से ऊँची हैं। इनमें सबसे ऊँची चोटी टसी-आफा-जावोना है। मेडेगास्कर द्वीप में सबसे ऊँचा स्थान उत्तरी अंटाकारा प्रान्त में अम्बोरो ६४६० फुट ऊँचा है। सारटानन दक्षिण-पूर्व में, इराट्सी और होरेम्बे दक्षिण में और ओहिमेएटी तथा एंटंड्राय (आग्नेय । दूसरे पर्वत हैं। धुर उत्तर की ओर अम्बोहित्रा का सुन्दर आग्नेय पर्वत है।

मेडेगास्कर का पूर्वी ढाल प्रस्तर-भ्रंश तट है और सीधा हिन्द महासागर में ढालू हो जाता है। इस तट

की ऊँचाई ३ हज़ार से ५ हज़ार फुट तक और गहराई १२ हज़ार से १५ हज़ार फुट तक है। पश्चिम की ओर मोजम्बीक जल डमरूमध्य की ओर पहाड़ी तट ढालू है जिसकी गहराई ६ हज़ार फुट से अधिक है। मध्यवर्ती पठार के बीच में घाटियां हैं। इन घाटियों में होकर लोग एक स्थान से हट कर दूसरे स्थान पर बसते हैं। ऊँचे पहाड़ों के मध्य उपजाऊ मैदान हैं जिनमें झीलों की कछारी भूमि में इमेरिना और बेटसीलियो के मैदान प्रसिद्ध हैं। इनमें धान की उपज खूब होती है और इसी धान की उपज के कारण अंटानानारियो ऐसे प्रसिद्ध नगर बस गये हैं। आंके और अलाओट्रा आदि की घाटियां भी बड़ी उपजाऊ हैं।

धुर दक्षिण-पश्चिम और दक्षिण की ओर कुछ उजाड़ ज़िले हैं। पठार की भूमि लाल और घाटियों की कछारी मिट्टी नीली और काली है।

इस द्वीप की प्रधान नदियां पश्चिम और उत्तर पश्चिम की ओर बहती हैं। पूर्व की ओर मंगोरो सबसे बड़ी नदी है और सभी छोटी नदियां हैं। पठारी प्रदेश छोड़ने के पश्चात् इन नदियों में नावें चल सकती हैं।

इन नदियों में जल प्रपात पाये जाते हैं। तटों पर आकर इन नदियों के मुहाने पर बालू की बाधा उत्पन्न हो जाती है। इकोपा नदी के प्रपात बड़े सुन्दर हैं। पूर्वी ढालों पर अच्छी वर्षा होने वाले भाग में छोटी छोटी नदियां बहुत हैं जिनमें प्रपात बहुत पाये जाते हैं। जिनमें माँगोरो और माननारा प्रसिद्ध हैं। पश्चिम की ओर की नदियां अधिक उपयोगी तथा बड़ी हैं। पठारों से उतरने पर उनमें प्रपात बन जाते हैं और मुहाने पर डेल्टा हैं। पश्चिमी नदियों में सबसे बड़ी बेटसीबोका है। इस नदी में बाईं ओर से आकर इकोपा नदी मिलती है। इकोपा नदी पर अंटानानारियो नगर स्थित है। बेटसीकोपा नदी में ७० मील तक नावें चल सकती हैं। वर्षा ऋतु में इकोया नदी में भी स्टीमर बेटसीकोपा से होकर मेवाटानन नगर तक चले जाते हैं। उत्तर की ओर सोफिया नदी की घाटी उपजाऊ है और सघन बसी है। दक्षिण की ओर टसिरबिहिना ओनीटाही और मंगोकी नदियां हैं।

पूर्वी तट पर नदियों के मुहानों पर अनूप हैं यह अनूप बड़े बड़े हैं। यदि ३० मील लम्बी भूमि काट कर नहर

बना कर अनूप मिला दिये जावें तो २७० मील तक तटीय प्रदेश में जहाज़ चल सकते हैं। यह कार्य आरम्भ हो गया है और ५५ मील तक इवोंड्रोना और अंडोवोराँटो के बीच नहर तयार हो गई है। इसके बनने से राजधानी से तट तक जहाज चलने लगे हैं। अनूपों के अतिरिक्त झीलें भी हैं जिनमें अलाओत्रा (अंटिसीहानका मैदान में) किनकोनी (उत्तर पश्चिम तट) और इटासी (पश्चिमी इमेरीना) प्रसिद्ध हैं। दक्षिणी-पश्चिमी तट पर टसिमान-म्पेट्सोट्सा नामक नमक की झील है। यह लगभग १२ मील लम्बी है इसके अतिरिक्त और भी दूसरी छोटी छोटी अनेक झीलें हैं।

जलवायु

मेडेगास्कर की जलवायु उष्ण कटिबंध की जलवायु है। केवल जलवायु में ऊँचाई, ढाल और प्रपातों से कुछ अंतर पड़ जाता है। मेडेगास्कर में दो प्रधान ऋतुएँ पाई जाती हैं। १—उष्ण और वर्षा काल नवम्बर से अप्रैल तक। २—सूखा और शीत काल अप्रैल से नवम्बर तक। दक्षिणी-पूर्वी ट्रेड हवाओं का प्रभाव समस्त द्वीप पर पड़ता है। इससे पूर्वी तट पर अच्छी वर्षा होती है और १६४ दिन तक वर्षा काल रहता है। पश्चिम की ओर वर्षा और सूखा काल ट्रेड हवाओं और मानसून के कारण अलग अलग हो जाते हैं। मजुंगा में सालाना औसत वर्षा अक्तूबर से अप्रैल तक में ४० इंच से १८०० इंच तक वर्षा होती है। पूर्वी तट पर १२० इंच से १८०० इंच तक होती है। जनवरी से मार्च तक पूर्वी तट पर चक्रवात चला करते हैं। समस्त द्वीप में ताप साढ़े पचपन अंश से साढ़े नवासी अंश तक रहता है। दक्षिणी और दक्षिणी-पश्चिमी तट की जलवायु अर्ध रेगिस्तानी है और वहां १२० इंच तक वर्षा होती है। पूर्वी तट दलदलों के कारण निवास करने योग्य नहीं है। पश्चिमी तट की जलवायु प्रत्येक स्थान की भिन्न है। इसके प्रत्येक मध्यवर्ती भाग की जलवायु साधारण सुन्दर और स्वास्थप्रद है।

संकेत
हिन्द महासागर
मेडागास्कर
तापक्रम जनवरी
सेंट मेरी द्वी०
महानारा
वाहेमार
मायोटा द्वीप
फोर्ट डाफिन
मेटीरानो
महानोरो
पैमाना

मेडागास्कर
शीतकालीन वर्षा इंचों में जुलाई
हिन्द महासागर
मोज़ाम्बिक प्रणाली
कोमोरो द्वी०
ग्लोरिओसो द्वी०
जोहीना द्वी०
मोहिला द्वी०
मायोटा द्वी०
डिगोस्वारेज़
वोहेमार
महानारा
मांजुगा
मोकाटिटोका
बेकोडोका
फीनोआरिवो
सेंटमेरी द्वी०
टमटेव
अंटोनानारिवो
सेरीनामा
महानोरो
मोसीवारिका
अम्बोहिबी
मानाज़हीरी
वोहीपनो
ट्यूलियर
मानाण्टेनीना
फोर्ट डाफिन
पैमाना
०
१००
२००
३००
४०० मी०
५००
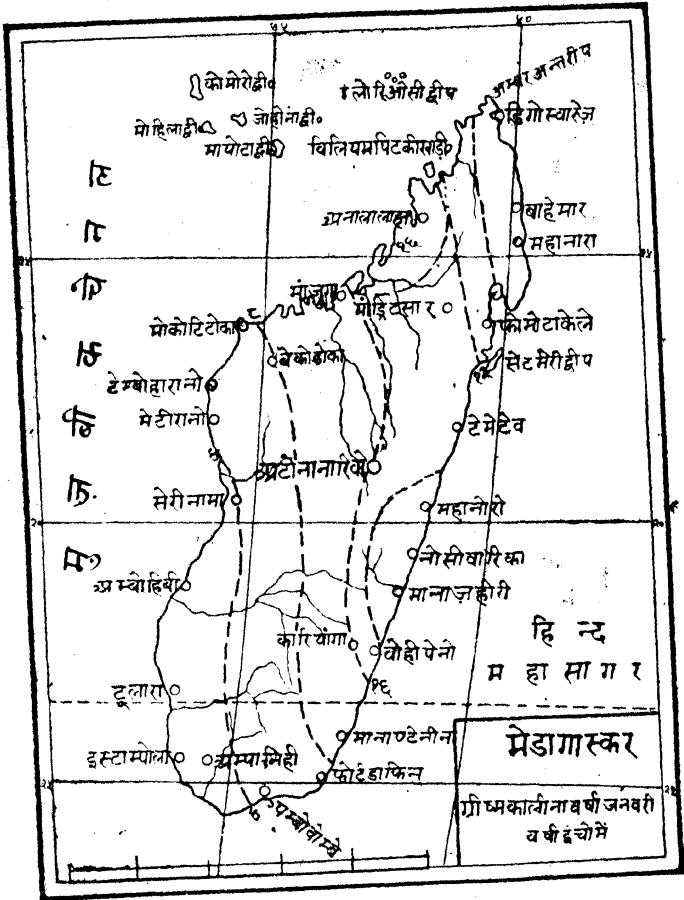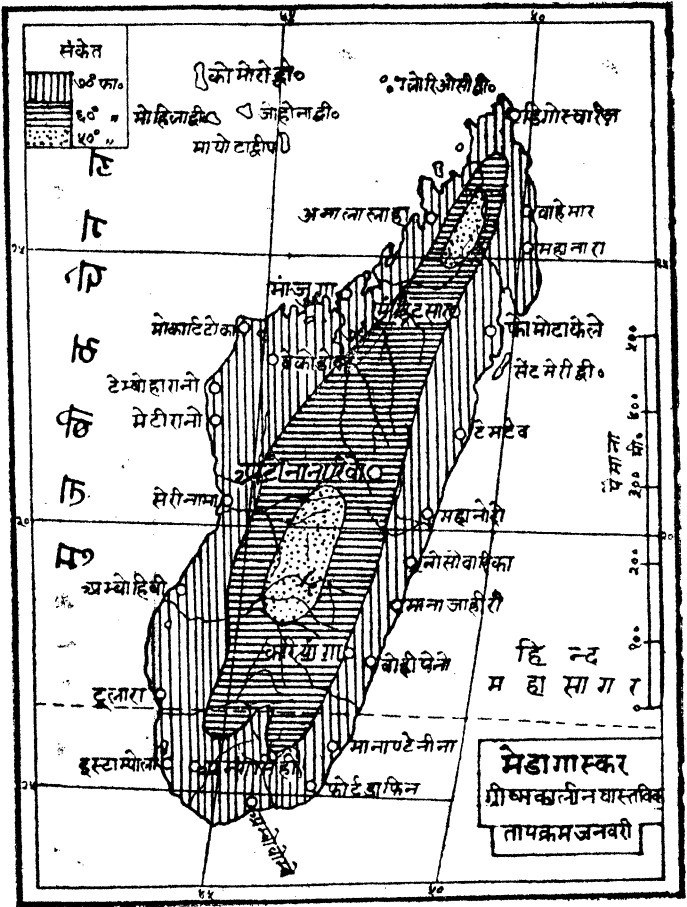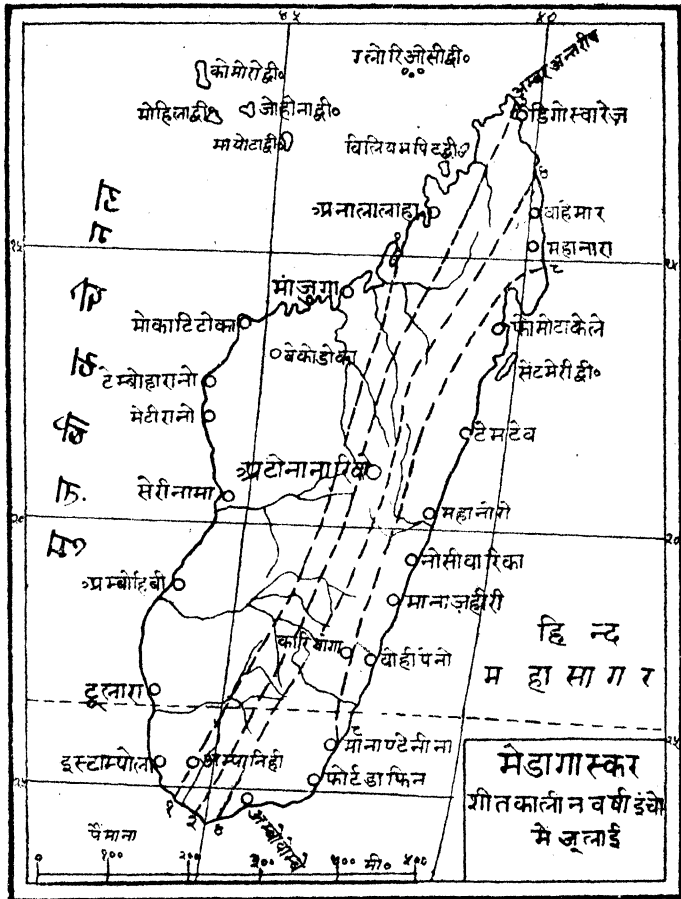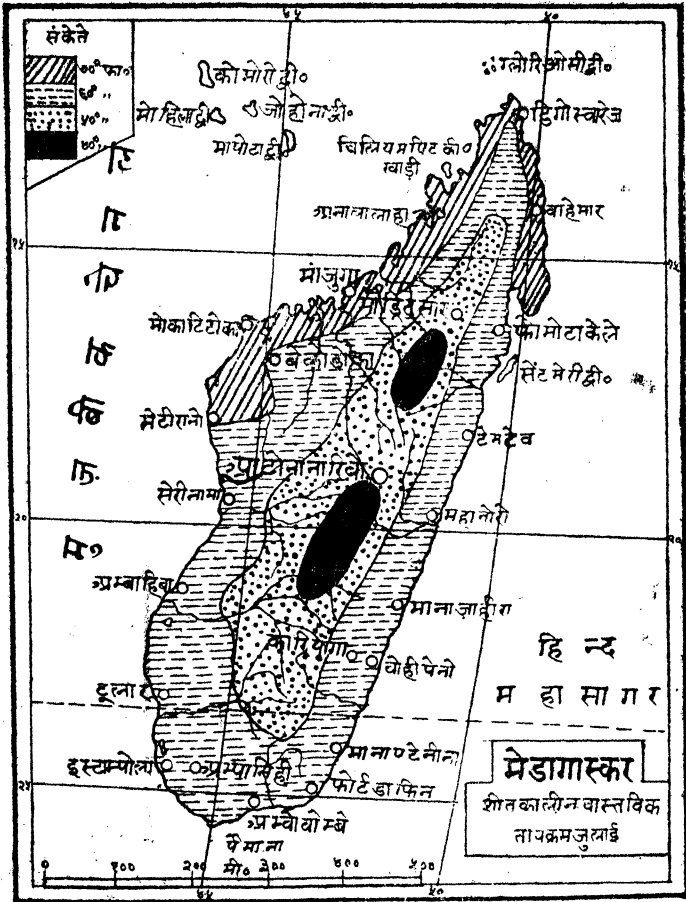
वनस्पति

मेडेगास्कर के तटीय प्रदेश में बन पाये जाते हैं। पूर्वी तट के बन पश्चिमी तट की अपेक्षा कहीं अधिक घने हैं। दक्षिण-पश्चिम की ओर जहां वर्षा बहुत कम होती है वृक्ष बहुत कम पाये जाते हैं। वहां मोटी पत्ती के वृक्ष मिलते हैं। यहां कुछ भाग में भारतीय रबर की खेती होती है। बनों में भांति भाँति की झाड़ियाँ और चौड़ी पत्ती के वृक्ष हैं। मेडेगास्कर की भूमि में १३.५ प्रतिशत भाग में बन पाये जाते हैं। बनों में कड़ी लकड़ी के मूल्यवान वृक्ष हैं। इबोनी और सनोवर, देवदार के वृक्ष बनों में अधिक हैं।

मेडेगास्कर के वृक्षों में एक वृक्ष यात्री के वृक्ष के नाम से प्रसिद्ध है। इसका तना बहुत लम्बा होता है और सिरे पर पंखे की भांति पत्ते होते हैं। इस वृक्ष से मनुष्य को स्वच्छ शीतल पानी मिलता है। इस वृक्ष का प्रत्येक भाग मकान बनाने के लिये बड़ा ही उपयोगी होता है। राफिया नारियल या बीफउड का वृक्ष मेडेगास्कर का एक अजोब वृक्ष है। इसके फल, लकड़ी, छाल और पत्तो सभी सुगंधित होते हैं। यह वृक्ष बड़ा ऊँचा होता है। टांगेना के वृक्ष से पहले विष तयार किया जाता था।

२
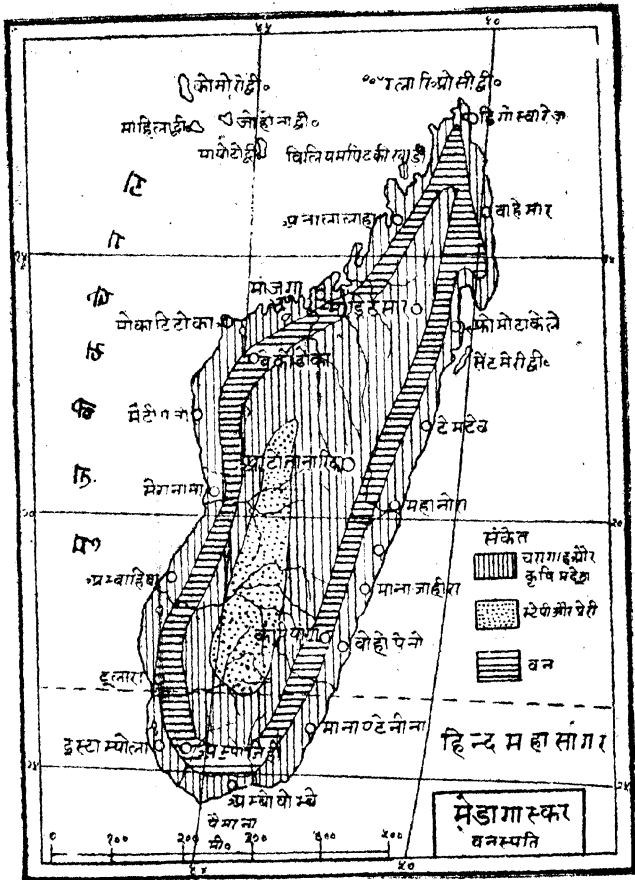
विद्य वृत्त १२ या १३ फुट ऊँचा होता है। नदियों और अनूपों के तट पर मैंग्रोव के वृत्त पाये जाते हैं जिसकी छाल, चमड़ा तयार करने के काम आती है। इसके अतिरिक्त और दूसरी भाँति के साधारण वृत्त पाये जाते हैं।

मेडेगास्कर में भांति भांति के पुष्पों के पौदे पाये जाते हैं जो बड़े सुगन्धित तथा सुन्दर होते हैं। कांटेदार झाड़ियां, लताएँ और बेलें भी तरह तरह की पाई जाती हैं। घास भी कई प्रकार की पाई जाती है। जिससे हैट, चटाई और टोकरी तयार की जाती हैं।

प्रत्येक भांति के फलों को उगाने का प्रयत्न किया जा रहा है। धान मेडेगास्कर का मुख्य अन्न है। मेल्गासी में मक्का, बाजरा, जुआर आलू आदि की उपज अच्छी होती है। कई भांति की वनस्पतियां तयार की जाती हैं।

प्रान्त तथा नगर

प्राकृतिक रूप से मेडेगास्कर पूर्वी, मध्यवर्ती और पश्चिमी तीन भागों में बांटा जा सकता है। पूर्वी भाग में अंटानकार्ना का प्रान्त उत्तर की ओर लगभग ५० मील लम्बा है। इस प्रान्त में वेटसिमीसार्का जाति निवास करती है। इसी के समानान्तर और दो बनों के मध्य बेज़ानोज़ानो का प्रान्त है। दक्षिणी भाग में टैम्बाड़ोका, टैमोरो, टैफासी, टैसाका और टैनोसी ज़िले स्थित हैं। मध्यवर्ती भाग में टसीमिहेटी, सिहानाका, इमेरिना और होवा प्रान्त हैं। बेटसिलेओ और टनाला जंगली जातियां रहती हैं। बारा और टनोसी जातियां भी इस भाग में आकर बस गई हैं। पश्चिमी भाग में साकलाव जाति के लोग रहते हैं। अधिक दक्षिण की ओर माहापाली टंड्रोय जातियां निवास करती हैं।

मेडेगास्कर की राजधानी अंटनानारिवो है। यह नगर इमेरिना प्रान्त में स्थित है। राजधानी की जन-संख्या ६८४५० है। टमाटावे नगर तथा बन्दरगाह पूर्वी तट पर स्थित है। इसकी जन-संख्या १३२१० है।

मेडागास्कर
राजनैतिक

हिन्द महासागर
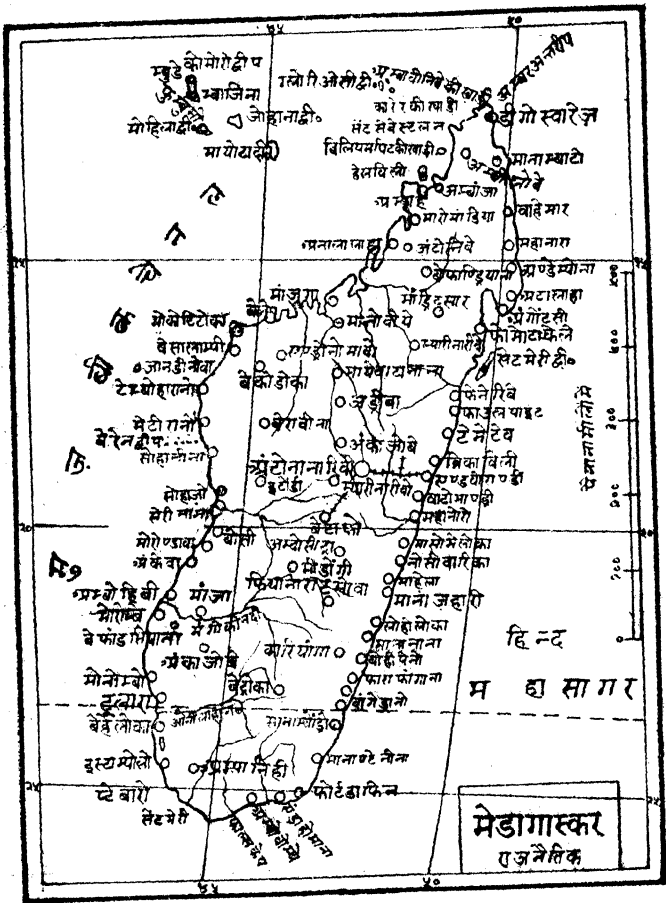
मजुङ्गा या मोजुङ्ग उत्तरी-पश्चिमी तट पर है। यह एक सुन्दर बन्दरगाह है। इस बन्दरगाह से इस द्वीप का निर्यात होता है। डीगोस्वारेज़ एक किलेबन्द नगर तथा जल सेना का अड्डा है। दक्षिणी-पूर्वी तट पर महनोरो और माननजारी के नगर तथा बन्दरगाह हैं जिनकी जन-संख्या ५ हज़ार है। टूलीर नगर दक्षिणी-पश्चिमी तट पर है। बेटसिलेओ प्रान्त का प्रधान नगर फिआनारंटसोव है जिसकी जन-संख्या ७ हज़ार है। इन नगरों के अतिरिक्त बहुत कम ऐसे नगर हैं जिनकी जन-संख्या २००० है।

पशु-पक्षी

मेडेगास्कर की अधिकांश भूमि पठारी और वृक्ष हीन है अतः वहां पशु-पक्षी नहीं रह सकते। बनों में भाँति भांति के पशु पाये जाते हैं। इस द्वीप में २५ भांति के चमगादड़ पाये जाते हैं। मोटी पूँछ वाली भेड़ और बकरियां बहुत हैं। सुअर भी बहुत पाले जाते हैं।

बड़े और छोटे सभी प्रकार के पक्षी द्वीप में पाये जाते हैं। बहुतेरे पक्षियों का रंग बड़ा सुन्दर होता है। झीलों नदियों में बड़े बड़े कछुए और घड़ियाल पाये जाते हैं। नदियों में मछली भी मिलती है जो भोजन का काम देती है। छिपकिली की भांति ये पशु बहुत हैं। वृक्षों पर रहने वाले मेंढक पाये जाते हैं। लगभग ८०० भाँति के कीड़े-मकोड़े और पतिंगे पाये जाते हैं। मेडे-गास्कर के पशु-पक्षियों से बिलकुल भिन्न हैं।

निवासी

मेडेगास्कर की जन-संख्या लगभग ३५ लाख है जिसमें १७ हज़ार फ्रान्सीसी और ढाई हज़ार विदेशी हैं। प्रत्येक वर्ग मील में औसत से ५ या ६ आदमी रहते हैं। केन्द्रीय तथा पूर्वी भाग में आबादी अधिक है।

मेलगासी लोग बाजा बजा रहे हैं।

मेडेगास्कर के निवासी मेलगासी कहे जाते हैं। मेलगासी कई जातियों में हैं। प्रत्येक भाग अथवा जाति के रीत-रिवाज भिन्न हैं। कम काले लोग मेलानेसियन
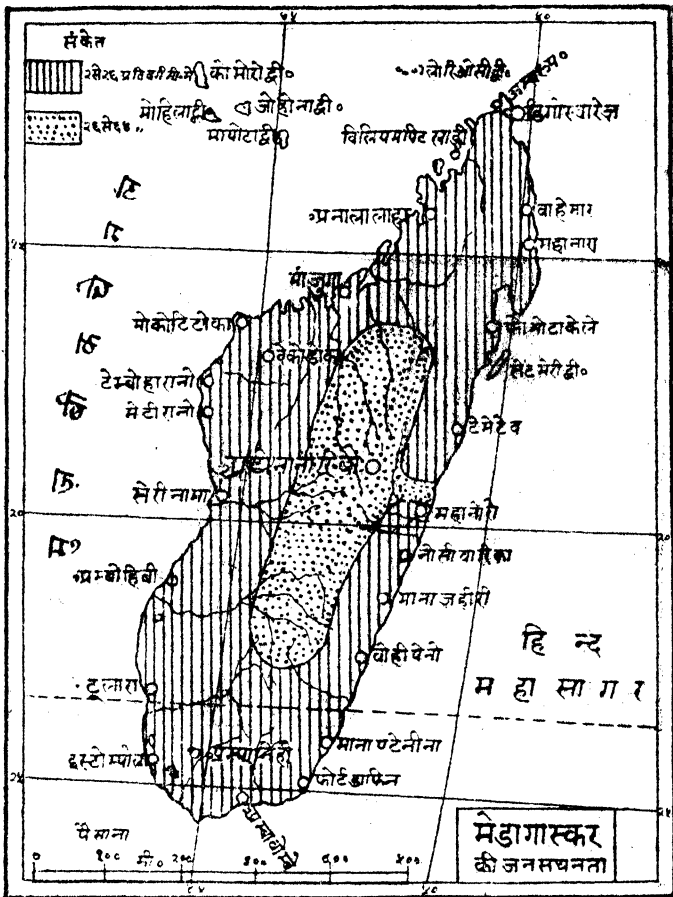
जाति के हैं। यहाँ के निवासियों की आदतें, रीति-रिवाज और भाषा भारतीय तथा प्रशान्त महासागरीय लोगों से मिलती जुलती है। शारीरिक बनावट में भी वह भारतीय लोगों से मिलते जुलते हैं। तटीय भाग में अरबी लोग आ बसे हैं जिससे वहाँ की प्रजा में उनका प्रभाव पड़ गया है। इन भागों के शासक श्रेणी वाले वे अरबी लोग हैं जो मूल निवासियों की लड़कियों के सम्बन्ध से उत्पन्न हुये हैं। अफ्रीका के माकाओ और मसोम्बिकी जाति वाले गुलाम मेडेगास्कर में लाकर बसाये गये हैं।

मेडेगास्कर में सबसे अधिक सभ्य तथा प्रभुत्वशाली जाति होवा है। यह लोग मङ्गोल जाति से मिलते-जुलते हैं इनका रंग भी हल्का साफ होता है। यद्यपि यह लोग सबसे पीछे मेडेगास्कर में जाकर बसे थे फिर भी अपनी संस्कृति के कारण सब से अधिक प्रभुत्वशाली बन गये हैं।

वर्णव्यवस्था

इमेरीना की होवा जाति पहले तीन भागों में विभाजित थी। १—अंड्रियाना या उच्च श्रेणी २—होवा स्वतंत्र लोग या साधारण श्रेणी के लोग ३—अंदेवो या गुलाम। १८९६ ई० की घोषणा के अनुसार अंदेवो लोग स्वतंत्र बना दिये गये हैं जो अब साधारण श्रेणी में हिलमिल गये हैं। अंड्रियाना वर्ण के लोग शासक वर्ण वाले माने जाते हैं। यह लोग मलयन सरदारों के घराने से हैं। भारतवर्ष में ब्राह्मण या क्षत्रियों की भाँति यह लोग बड़े उच्च माने जाते हैं। उन्हें कई एक विशेषाधिकार प्राप्त हैं। इन लोगों को नमस्कार प्रणाम करने के लिये एक विशेष ढंग का प्रयोग होता है। यह लाल रंग का छाता (शासक चिन्ह) प्रयोग करते हैं। यह लोग एक विशेष भाँति की समाधि बनाते हैं।

इमेरीना के अधिकाँश लोग होवा वर्ण के हैं। यह साधारण श्रेणी वाले अपने वर्ण में ही विवाह सम्बन्ध
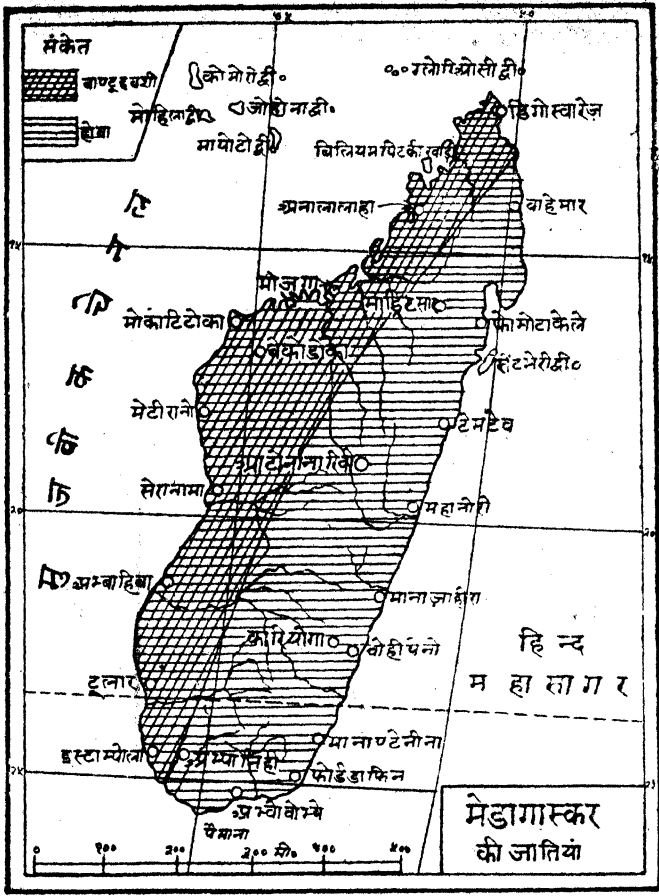
करते हैं जिससे माल और जायदाद का बँटवारा न हो सके।

मोज़म्बीक या अफ्रीकन गुलामों को अरबी लोगों ने अफ्रीकन तटों से लाकर मेडेगास्कर में बसाया। ब्रिटिश सरकार के साथ १८७७ ई० के समझौते के अनुसार यह लोग स्वतंत्र बना दिये गये हैं।

मेलगासी जातियों में होवा जाति की सामाजिक संस्थाएँ अधिक शक्तिशाली हैं। इनके राज्य अधिक शक्तिशाली हैं जिनका शासन सरदारों के हाथ में रहता है। होवा जाति के लोग परिश्रमी, सभ्य और देश प्रेमी होते हैं।
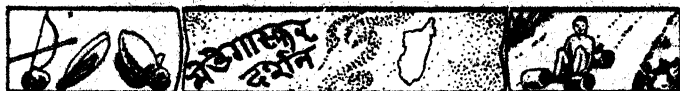
पेशा

मेलगासी लोगों का मुख्य पेशा खेती है। धान की खेती प्रधान है। नदियों के किनारे या पहाड़ों के बीच

मेडगास्कर में धान के खेत में मज़दूर काम कर रहे हैं।

नीची भूमि में धान की बियाढ़ की जाती है। खेती के काम में बेटसीलियो लोग बड़े निपुण हैं। खेती में हल का प्रयोग किया जाता है। खेती का समस्त काम एक लम्बे

फावड़ा द्वारा होता है। धान की बेहन (पौधे) लगाने वाली भूमि को पानी भर जाने पर बैलों से कुचलाया जाता

मेलागासी स्त्रियाँ चावल तैयार कर रही हैं।

है उसके बाद धान के पौदे लाकर खेतों में लगाये जाते हैं।

मध्यवर्ती तथा पूर्वी भाग में दस्तकारी का काम अधिक होता है। इन भागों में स्त्रियां सूत कातने और कपड़ा बुनने का काम करती हैं। रुई, रेशम, सन, पाट,
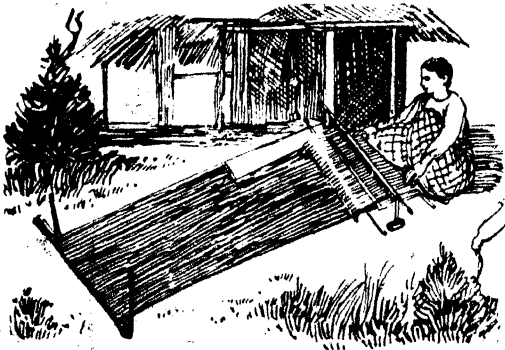
मेडगास्कर के घरों में कपड़े की बिनाई।

केला और नारियल के रेशों का सूत तयार किया जाता है और फिर उससे सुन्दर रंग-बिरंगे कपड़े तयार किये जाते हैं। स्त्रियां घास तिनकों और पापीरस की छाल से चटाई, टोकरी और हैट तयार करती हैं। दक्षिण और दक्षिण-पूर्व के लोग मुलायम चटाइयों को ओढ़ने के लिये

प्रयोग करते हैं। मेलगासी लोग साग पात के रेशों का
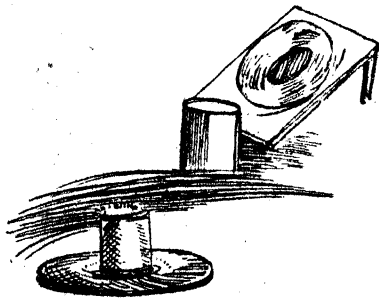
हैट तैयार करना।

प्रयोग करते हैं। यह लोग पशुओं की खाल या चमड़ा का प्रयोग कपड़ा तयार करने के लिये नहीं करते हैं।

मेडेगास्कर के लोग वस्त्र का प्रयोग बहुत कम करते

लेमूर पशु मेडेगास्कर के घरों में पाला जाता है।

फियारंट सोआ बाज़ार में हैटों की दूकानें।

फियारंट सोआ के बाज़ार का एक दृश्य

मेडेगास्कर के मज़दूर चारकोल ले जा रहे हैं।

देशी जड़ी बूटियों का बाज़ार।

हैं। मर्द सलाका (एक प्रकार का कुर्ता) पहिनते हैं और स्त्रियाँ जाकेट पहिनती हैं और एक कपड़ा सीने से एड़ी
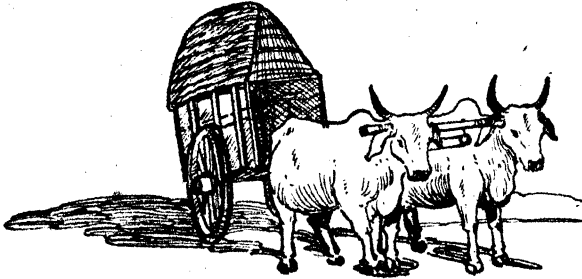
मेडेगास्कर की एक बैलगाड़ी।

तक लपेटे रहती हैं जिसे किताम्बी कहते हैं। स्त्री तथा पुरुष सभी इन वस्त्रों के ऊपर लम्बा चौकोर चद्दर लपेटते हैं।

मलय लोग चांदी सोने के ज़ेवर तथा जंजीर बड़ी सुन्दर तयार करते हैं। लोहे का काम बड़ा सुन्दर तयार किया जाता है। पीतल और तांबे का काम वे योरुपीय लोगों की भांति ही निपुणता के साथ करते हैं। उनमें नवीनता की प्रबल शक्ति है और वे जिस नई वस्तु को देखते हैं उसे वे उसी भांति तयार कर लेते हैं।
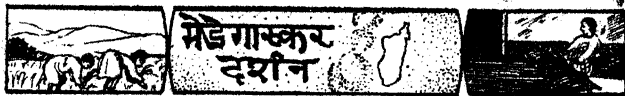
घर और धर्म

मेलेगासी जाति के भिन्न वर्ण अपने घर भी भिन्न प्रकार के बनाते हैं। मेडेगास्कर के भीतरी भागों के घर

जङ्गली घर।

सुन्दर साफ सुथरे रहते हैं। घर मिट्टी के बनाये जाते हैं और छत टहनियों तथा घास फूस की बनाई जाती हैं। जंगली लोग घरों की दीवाल बांस की बनाते हैं और स्तम्भों पर तयार करते हैं। तटीय लोग बांस के घर बनाते हैं। दक्षिण की ओर घर एक साधारण झोंपड़ा

होता है जिसमें लोग बैठ या लेट कर प्रवेश कर सकते हैं। होवा और बेटसीलियो जातियां अपने गांव ऊँची पहाड़ियों पर बनाते हैं जिससे वे सुरक्षित रहें। गांव के चारों ओर

मधुमक्खी के छत्तों की भाँति झोंपड़े।

एक दूसरे के भीतर कई एक गहरी खाइयाँ खोदी जाती हैं।

मेडेगास्कर निवासियों के मध्य कई स्त्रियों के साथ विवाह करने की प्रथा प्रचलित है। स्त्रियों का मान

अधिक होता है। स्त्री और पुरुष के अधिकार समान हैं। मदिरा पीने की प्रथा बहुत है। मेडेगास्कर के निवा-

मेडेगास्कर निवासियों के घर।
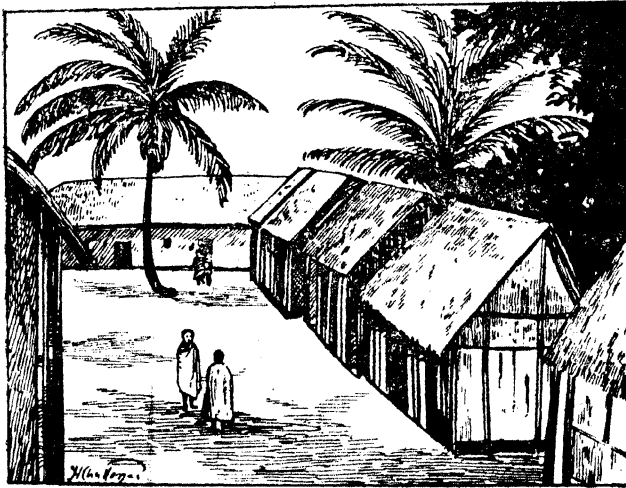
सियों में घरेलू तथा मित्रवत् प्रेम बहुत पाया जाता है। बड़े-बूढ़ों को छोटे लोग बड़ा आदर करते हैं।

मेलेगासी लोगों के मध्य कोई संगठित धर्म प्रचलित नहीं है। उनके पूजा का भी कोई खास ढंग नहीं है। उनके मन्दिर अथवा मूर्तियां नहीं होती हैं। उनके बीच

ग्रामयाचक (पुरोहित) भी नहीं होते हैं। फिर भी वे सर्व शक्तिमान के तथा जन्मदाता के अस्तित्व में अचूक विश्वास रखते हैं। सर्व शक्तिमान को अंद्रियामानित्रा और जन्मदाता (ब्रह्मा) को ज़नाहारी कहते हैं। पितृ-पूजा और प्रकृति की शक्तियों की पूजा भी प्रचलित है। होवा लोग जादू में भी विश्वास करते हैं। पक्षियों और भेड़ों के बलिदान की भी प्रथा है। यह बलिदान नियत स्थानों पर फसल तयार होने पर दिये जाते हैं। साल में नव-दिवस के दिन बड़ा उत्सव मनाया जाता है। उस दिन नहाने की प्रथा है। इसी कारण उसका नाम फानड्रोना (नहाना) रक्खा गया है। यह त्योहार अब फ्रान्सीसी फेरे १४ जुलाई के साथ मिला दिया गया है। दूसरा बड़ा उत्सव मुसलमानी या खतना के समय मनाया जाता है। मृत्यु के समय भी भोज आदि होता है। धनी तथा बड़े आदमी के मरने पर बैलों का बलिदान होता है।
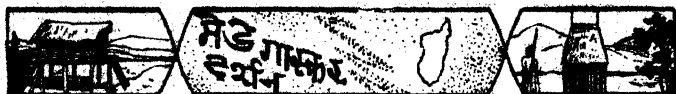
आर्थिक दशा

मेडेगास्कर निवासी पहले केवल धान की खेती का काम करते थे। अब खास कर पूर्वी तट में कोको, क़हवा रबर आदि की उपज भी की जाने लगी है। पश्चिम की ओर ईख, कपास और कापोक की उपज की जाती है। पशु पालने का रिवाज़ बढ़ रहा है। मेडेगास्कर में एक करोड़ पशु, ५ लाख सुअर, २२ करोड़ भेड़ और डेढ़ लाख भेड़े हैं। डेयरी का काम भी मेडेगास्कर में होने लगा है। चीनी, रेशम, सूत कातने, रेशा तयार करने और चावल तयार करने के लिये कारखाने खोल दिये गये हैं। १८६७ ई० से मेडेगास्कर में सोना निकालने का काम आरम्भ हुआ परन्तु ट्रान्सवाल से जो विशेषज्ञ आये उन्होंने राय दी कि मेडेगास्कर की सोने की खान में अधिक सोना नहीं निकल सकता फिर भी सोने को खोदाई में कई हज़ार मज़दूर काम करते हैं और १६२४ ई० में ३३,६५,११४ फ्रैंक का सोना बाहर भेजा गया। इस द्वीप का तीन चौथाई व्यापार फ्रान्स के साथ होता है।

१६२६ ई० में ३७०,३८,२४,६५ रुपया का आयात और ३३,४६,१०,६१८ रुपया का निर्यात मेडेगास्कर

में हुआ। कच्चा चमड़ा, नमक, मांस, चावल, सूखी तरकारी टैपिओका, क़हवा आदि वस्तुएँ बाहर भेजी जाती हैं। सोना और बहुमूल्य पत्थर भी बाहर भेजे जाते हैं। रूई, शराब, कलें, धातु, सेमेंट, पिट्रौल और आटा बाहर से मँगाया जाता है।

संक्षिप्त इतिहास

मेडेगास्कर के निवासी कई वर्ण अथवा जातियों में विभाजित थे। यह जातियाँ अलग अलग निवास करती थीं। इन जातियों के अपने अपने राजा अथवा सरदार अलग अलग थे। राजा या सरदार अपने पड़ोसी सरदार से लड़ा करते थे। सत्रहवीं सदी में साकलाव नामक लड़ाकू जाति जो मेडेगास्कर के दक्षिण-पश्चिम में रहती थी उसने द्वीप के पश्चिमी आधे भाग पर अपना अधिकार जमा लिया। उस जाति ने कुछ उत्तरी तथा मध्यवर्ती जातियों पर भी विजय प्राप्त की और दो राज्य स्थापित किये। यह राज्य अठारहवीं सदी तक बने रहे। उसके बाद अंड्रिआनिम्पोइना और राडाया राजाओं के समय में होवा जाति के इमेरिना प्रान्त में प्रवेश करना आरम्भ किया। १८९५ ई० तक होवा जाति का शासन मध्यवर्ती और पूर्वी मेडेगास्कर पर रहा। दक्षिण-पश्चिम की जातियां स्वतन्त्र रहीं।

अरब निवासी भी मेडेगास्कर में आये और उत्तरी-पश्चिमी तथा दक्षिणी-पूर्वी तट पर बस गये। दक्षिणी-पूर्वी भाग में जो अरबी लोग बसे वह वहाँ की जातियों में घुल-मिल गये। उत्तर-पश्चिम और पश्चिम की ओर

अरब लोगों ने अपनी बस्तियाँ बसाईं। अनोरोंटसागा, मोजांगा, मारोवोसी और मोरोंडावा बन्दरगाहों पर अब भी अरब लोगों का अधिकार है। इन स्थानों पर हिन्दू जाति भी बसी है क्योंकि कई सदियों से मेडेगास्कर और भारतवर्ष का सम्बन्ध चला आ रहा है। आरम्भ काल में मेलेगासी लोगों पर अरब जाति का बड़ा प्रभुत्व था इसी कारण मेलेगासो के महीनों दिनों के नामों में अरबी नाम पाये जाते हैं और भाषा में भी अरबी शब्द मिलते हैं।

१० अगस्त सन १५०० ई० में डिवोगोडिआज नामक पुर्तगाली कैप्टन पूर्वी तट पर सेंट लारेंस के दिन पहुँचा इसीलिये लगभग १०० वर्षों तक इस द्वीप का नाम सेंट लारेंस रहा। पुर्तगालियों के बाद डच लोग मेडेगास्कर में गये और अपना सिक्का जमाने का प्रयत्न किया। चार्ल्स प्रथम के समय में मेडेगास्कर में ब्रिटिश बस्ती बसाने का उपाय किया गया। सत्रहवीं सदी के अन्त और समस्त अठारहवीं सदी में फ्रान्सीसी जाति ने पूर्वी तट पर सैनिक स्थान बनाने का प्रयत्न किया और फोर्ट डाफिन पर अधिकार जमाया परन्तु समस्त
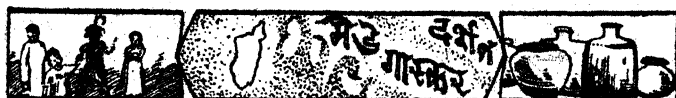
फ्रांसीसी मार डाले गये। १८११ ई० में टमाटाव्रे पर ब्रिटिश सेना ने अधिकार कर लिया। मेडेगास्कर पर शासन करने का झगड़ा फ्रान्सीसियों और अंग्रेज़ों में हुआ। अंग्रेज़ लोग होवा जाति को मेडेगास्कर पर शासन करने के लिये सहायता दे रहे थे।

होवा जाति का शासन

रडामा प्रथम (१८१०-१८२८) के समय से मेडेगास्कर का राजनैतिक इतिहास आरम्भ होता है। एक उन्नतिशील राजा था। उसने अपनी प्रजा को शिक्षित तथा सभ्य बनाने का प्रयत्न किया और मारीशस के गवर्नर से लिखा पढ़ी करके गुलामों की निर्यात को रोकने का प्रयत्न किया। कुछ वर्षों तक रडामा के दर्बार में ब्रिटिश राजदूत भी रहा। १८२० ई० में लन्दन के ईसाई प्रचारकों ने मेडेगास्कर में ईसाई धर्म का प्रचार आरम्भ किया। ३६ वर्ष की अवस्था में रडामा प्रथम की मृत्यु हो गई और रानवालोना नामक रानी ने राजगद्दी पर अधिकार कर लिया।

रानी ईसाई धर्म के विरुद्ध थी इसलिये १८३५ ई०

में ईसाई मत का प्रचार गैरकानूनी बना दिया गया पुस्तकें छीन ली गईं और ईसाइयों को प्राणदण्ड दिये गये। योरुपीय जाति को मेडेगास्कर से निकाल दिया गया और विदेशी व्यापार एकदम रोक दिया गया।

१८६१ ई० में महारानी की मृत्यु हो गई और राजा रडामा द्वितीय राजगद्दी पर बैठा। रडामा के सिंहासन पर बैठते ही मेडेगास्कर का व्यापार योरुपीय लोगों के लिये खोल दिया गया और ईसाई धर्म का प्रचार भी होने लगा। रडामा ने एक फ्रांसीसी कम्पनी को बड़े-बड़े अधिकार दे दिये। विदेशी तथा देशी चापलूसों ने रडामा पर अपना अधिकार जमा लिया और १८६३ ई० में उसकी हत्या कर डाली और उसकी स्त्री को सिंहासन पर बैठा दिया। उसका नाम रानी रोज़ोहेरिना था। रोज़ोहेरिना के पांच वर्ष के शासन में मेडेगास्कर की उन्नति हुई और इङ्गलैण्ड, फ्रांस तथा संयुक्त राष्ट्र अमरीका के साथ संधियाँ की गईं। ईसाई धर्म प्रचारक लोग अपने मत का प्रचार स्वतंत्रता पूर्वक करने लगे।

रोज़ोहेरिना की मृत्यु हो जाने पर १८६८ ई० में रानावालोना द्वितीय सिंहासन पर बैठी। सिंहासन पर

बैठते ही उसने समस्त राज्य में साधारण रूप से ईसाई धर्म को मानने के लिये आज्ञा दे दी और वह तथा उसका पति (प्रधान मन्त्री) ईसाई हो गये। मध्यवर्ती प्रान्तों की मूर्तियाँ आदि उसी समय नष्ट कर दी गई। रानी के पोते तथा प्रधान मन्त्री का नाम रैनीलेआरिओनी था। वह बड़ा चतुर और बुद्धिमान था। उसके समय में मेडेगास्कर की अच्छी उन्नति हुई ओर विदेशी राज्यों के साथ मेडेगास्कर का राजनैनिक सम्बन्ध स्थापित हो गया और विदेशी राजदूत मेडेगास्कर के राज दरबार में रहने लगे। इङ्गलैंड और फ्रांस ने निश्चय किया कि वे मेडेगास्कर की स्वतंत्रता का आदर करेंगे और समस्त द्वीप पर होवा वंश का शासन स्वीकर करेंगे।

फ्रांस के साथ सम्बन्ध

मेडेगास्कर में होवा जाति का शासन ब्रिटेन के अनुकूल था परन्तु फ्रांस के प्रतिकूल था। फ्रांस का प्रभुत्व मेडेगास्कर पर गहरा पड़ चुका था अतएव १८४० ई० में नोसीबे द्वीप के शासक साकलावा को फ्रांस ने अपनी छत्रछाया में ले लिया था और उसी अधिकार

के अनुसार फ्रांस ने मेडेगास्कर के उत्तरी-पश्चिमी तट पर अपना अधिकार जमाना चाहा। १८६८ ई० की संधि के अनुसार फ्रांस ने रानावालोना द्वितीय को मेडेगास्कर की महारानी स्वीकार किया।

१८७८ ई० में लबोर्डे का फ्रांसीसी राजदूत मर गया और उसकी जायदाद के बँटवारे के सम्बन्ध में झगड़ा छिड़ गया। फ्रांसोसी सरकार लबोर्डे उत्तराधिकारियों की सहायता कर रहे थे। फ्रांस ने होवा राजघराने पर भी मेडेगास्कर के उत्तरी-पूर्वी तट पर भी फ्रांस के अधिकार होने का ज़ोर डाला। मई सन् १८८३ ई० में फ्रांस ने मेडेगास्कर की महारानी के पास अन्तिम शर्तें भेजीं और उन्हें शीघ्र ही स्वीकार करने को लिखा। महारानी के इन्कार करने पर टामाटावे पर फ्रान्सीसी सेना ने बम्ब वर्षा की और अधिकार कर लिया। कुछ समय तक युद्ध चलने के पश्चात् १७ दिसम्बर सन् १८८५ ई० को मेडेगास्कर की होवा सरकार और फ्रान्स में संधि हो गई। संधि के अनुसार मेडेगास्कर की विदेशी नीति का संचालन फ्रांस करने लगा। मेडेगास्कर के राज दरबार में फ्रांसीसी राजदूत
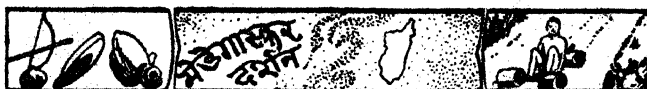
रक्खा गया। डीगोस्वोरज़ को खाड़ी और उसके आस पास का देश फ्रांस को दे दिया गया। संधि में यह बात भी निश्चित कर ली गई थी कि रानी के अधिकार सुरक्षित रहेंगे और मेडेगास्कर की सरकार वहाँ की विदेशी नीति में किसी प्रकार की रोक नहीं उत्पन्न करेगी। १३ जुलाई १८८३ ई० को मेडेगास्कर के सिंहासन पर रानावालोना तृतीय बैठी। १८९० ई० में ब्रिटिश सरकार ने मेडेगास्कर पर फ्रान्स की क्षत्रछाया की स्वीकृत दे दी परन्तु मेडेगास्कर का प्रधान मन्त्री रैनीलैआरिओनी ब्रिटिश सहायता से सेना बढ़ाता रहा और फ्रान्स का विरोधी बना रहा। फ्रान्स की सरकार इस कार्य को सहन न कर सकी और १८९४ ई० में फ्रान्स की सरकार ने मेलेगासी राजा के पास अपनी अंतिम शर्तें भेज दीं। जिनके अनुसार मेडेगास्कर फ्रान्स की शक्ति सबसे अधिक प्रभुत्वशाली हो जाने को थी। मेडेगास्कर की सरकार ने फ्रान्स की शर्तों को मानने से इंकार कर दिया इस पर फ्रान्स और मेडेगास्कर के मध्य युद्ध छिड़ गया। फ्रान्सीसी सेना ने मुख्य मुख्य बन्दरगाहों पर अधिकार कर लिया और

जनरल डचेस्ने के संचालन में एक फ्रान्सीसी सेना मोजंगा में होवा सरकार को हटाने के लिये उतार दी गई। ३० सितम्बर सन् १८९५ ई० को फ्रान्स की सेना ने मेडेगास्कर की राजधानी अंटनानारियो पर अधिकार कर लिया। इस प्रकार मध्यवर्ती प्रान्त फ्रान्सीसी छत्रछाया में आ गये। १८९६ ई० में इमेरिना में भीषण विप्लव हो गया। यह बलवा अँग्रेजों, विदेशियों और ईसाइयों के विरुद्ध हुआ था।

जनरल गलीनी (फ्रान्सीसी) को विप्लव शान्त करने में बड़ी कठिनाई उठानी पड़ी। मेडेगास्कर को फ्रान्सीसी उपनिवेश बनाने तथा वहां से होवा सरकार का अंत करने के लिये उसे मार्शल्ला (फौजी नियम) की घोषणा करनी पड़ी। महारानी रानवालोना तृतीय मेडेगास्कर से निकाल दी गई और रियूनियन में जाकर रहने लगी। रियूनियन से वह अल्जीरिया गई और १९१७ ई० में वहीं उसका देहान्त हो गया।

१८९० ई० तक में मेडेगास्कर पर फ्रान्स का शासन भलीभांति स्थापित हो गया। १९०५ ई० में जनरल गलीनी के स्थान पर विक्टर अगान्यूर गवरनर

जनरल हुआ । अगान्यूर के समय में मेलेगासी लोगों पर कर बहुत लगा दिया गया और उनके धार्मिक कार्यों में बाधा डाली गई । १९०७ ई० में सैकड़ों धार्मिक स्कूल तथा कुछ चर्च सरकारी आज्ञा द्वारा बन्द करा दिये गये ।

जुलाई १९१० ई० में अगान्यूर के स्थान पर एन पिक्वी गवरनर जनरल बनाया गया । उसके समय में मेडेगास्कर में अधिक से अधिक फ्रान्सीसी लोगों को रहने के लिये उत्साहित किया गया । मेडेगास्कर के निवासी तथा होवा साकलावा और बेटसिमिसाकी आदि जातियों को भी सुधारने का प्रयत्न किया गया । उन्हें सरकारी नौकरियाँ दी गईं तथा फ्रान्सीसी नागरिकता के अधिकार भी दिये गये ।

मेलेगासी लोगों के बीच राष्ट्रीयता का भाव बना रहा और १९१४ में गत महायुद्ध काल में फ्रान्स के विरुद्ध एक गुप्त संस्था स्थापित की गई । इस संस्था में मेलेगासी सरकारी अफ़सर भी शामिल थे । इस संस्था के सदस्य फ्रान्सीसी तथा योरुपीय अफसरों को जहर देकर धीरे धीरे सभी लोगों का अंत कर देना चाहते थे । १९१६ ई० में इस गुप्त संस्था का पता लग गया । इस

संस्था के सदस्य कोमोरो द्वीप भेज दिये गये बुरे अफ़सरों के स्थान पर अच्छे योरुपीय अफसरों की नियुक्ति भी की गई।

गत महायुद्ध के समय फ्रान्स, सीरिया और मरक्को में मेलेगासी सैनिकों को काम करना पड़ा था। जब वे सैनिक मेडेगास्कर में लौट कर आये तो भांति भांति की बीमारियां उनके साथ देश में प्रवेश कर गईं जिससे होवा तथा दूसरी जातियों की संख्या घट गई।

फरवरी १६२४ ई० को मार्सेल ओलीवीर गवरनर जनरल बना। उसने केन्द्रीय सरकार की शक्ति कम कर दी और प्रान्तीय सरकारों को अधिक से अधिक अधिकार दे दिये। १६२४ ई० में उसने अपनी सहायता के लिये एक सलाहकारिणी सभा बनाई जिसमें २४ योरुपीय तथा २४ मेलेगासी लोग रक्खे गये। मेलेगासी लोगों को उच्च पदों पर स्थान दिया जाने लगा। शिक्षा की ओर भी अधिक ध्यान दिया गया। बच्चों के लिये अनिवार्य शिक्षा कर दी गई। टनानारियो आदि नगरों के लिये उच्च शिक्षा के विद्यालय खोले गये। इस प्रकार मेलेगासी लोगों की शिक्षा उन्नति करने लगी।

मेडेगास्कर के बालक

मेडेगास्कर के मेलेगासी बच्चे सवेरे अपने जानवरों को लेकर चराने के लिये जाते हैं। पशुओं को चराने का भार उन पर ही होता है। वह प्रत्येक भांति की घासों के नाम आदि जानते हैं। वह मैदान में ही अग्नि बनाकर मीठे आलू तथा शकरकन्द भून कर खाते हैं। पशुओं

मेडेगास्कर के बच्चे घरेलू पशुओं को चरा रहे हैं।

को चराते समय वह मिट्टी के खिलौने बना कर अपनी तबीयत बहलाते हैं।

मेलेगासी बालक धान के खेतों में अपने माता पिता की सहायता पौधों को लगाने, निराने और काटने

आदि में करते हैं। ८ या ६ वर्ष की अवस्था में वे समीप वर्ती स्कूल में पढ़ने के लिये भेजे जाते हैं और पढ़ना लिखना, अंकगणित, भूगोल इतिहास, धार्मिक शिक्षा फ्रान्सीसी भाषा और संगीत आदि सीखते हैं। प्रारम्भिक शिक्षा में बालकों को स्कूल में ही शिक्षा सम्बन्धी काम करना पड़ता है उन्हें घर के लिये स्कूल की ओर से काम नहीं दिया जाता। हाई स्कूल की शिक्षा प्राप्त करने के लिये वह राजधानी या मिशन के स्कूलों में जाते हैं। राजविद्या होने के कारण ही उन्हें फ्रान्सीसी भाषा का अध्ययन करना पड़ता है।

मेडेगास्कर में शनिवार के दिन छुट्टी रहती है उस दिन बच्चे नहाते तथा अपने कपड़े साफ करते हैं। रवि-वार को वह साफ सुथरे वस्त्र धारण करके गिरजाघरों में जाते हैं।

बालिकायें

मेडेगास्कर की बालिकाएँ अपने भाइयों की भांति ही घरेलू कार्यों में आरम्भ काल से ही हाथ बटाती हैं। प्रातः काल उठती हैं। वह शहतूत की पत्तियां रेशम के

कीड़ों से रेशम तयार किया जाता है और स्त्रियां उसी रेशम से सुन्दर वस्त्र तयार करती हैं। उन्नतिशील घरों की लड़कियां पढ़ने के लिये पाठशालाओं में भेजी जाती हैं। वह अपनी पुस्तकें आदि एक झोले में लेकर पाठशाला जाती हैं।

जो बालिकायें पढ़ने नहीं जातीं वह गांव के बाहर से जलाने के लिये लकड़ी और घास ले आती हैं। भोजन तयार करने में वह अपनी माताओं का हाथ बटाती हैं। चटाइयों पर बैठकर भोजन किया जाता है। पानी लाने का काम भी लड़कियां ही करती हैं। बालिकायें नदी में जाकर पानी के घड़ों में पानी लाती हैं। वह मिट्टी के मटके अपने सिर पर रख कर ले आती हैं। मटके के नीचे वह घास की बनी हुई गोंदरी रखती हैं जिससे घड़ा सिर से गिर न पड़े। बड़ी लड़कियां पानी भरने के लिये जब जाती हैं तो अपने बच्चों को अपनी पीठ पर लाद लेती हैं। पीठ पर बँधे हुये बच्चे बड़े प्रफुल्लित रहते और बहुधा उसी दशा में सो भी जाते हैं। पानी लाने के बाद धान कूटने का काम भी उन्हें करना पड़ता है। लड़कियाँ बन से शहद लाने का कार्य भी करती हैं।

मेडेगास्कर की स्त्रियां ही सिर पर लाद कर बोझ ढोने का काम करती हैं। मर्द बोझ ढोने का काम बिलकुल

बच्चे को लिये हुए पनघट की ओर।

नहीं करते हैं। बालिकायें अपनी माताओं की घरेलू कार्य में बड़ी सहायक होती हैं। १७ या १८ वर्ष की अवस्था में युवा हो जाने पर बालिकाओं का ब्याह होता है। ब्याह हो जाने पर वह अपने पति के घर जाकर निवास करने लगती हैं।

गृहस्थ-जीवन

फ्रान्सीसी शासन के पहले मेलेगासी लोगों में १२ या १३ वर्ष की अवस्था में ब्याह होता था। बर के माता-पिता कन्या के माता पिता के पास जाते थे और बर तथा कन्या की सम्मत्ति के विरुद्ध ही ब्याह हो जाता था। ब्याह के चिन्ह रूप बर के माता पिता कन्या के माता पिता को मोटी भेड़ की मोटी पूँछ भेंट करते थे। परन्तु अब फ्रान्सीसी शासन होने के कारण ब्याह फ्रान्सीसी ढंग से होने लगे हैं। ब्याह होने के पश्चात् वह अपने सास ससुर के साथ निवास करती है वह अपने सास के कामों में हाथ बटाती है।

प्रथम बालक अथवा बालिका आजा (पिता के पिता) की सम्पति हो जाती है। मेडेगास्कर में नाम बहुधा बदला करता है। बालपन के बालक का नाम इकोटो (बालक) और बालिका को बोसी कहते हैं। ब्याह होने के पश्चात् जब वह एक बालक का पिता हो जाता है तो उसका नाम रैन कोटो (बालक का पिता) हो जाता है। यदि बालिका का पिता हुआ तो रैनबोसी

चटाई बनाना ।

नाम हो जाता है। युवा होने पर एक पौंड प्रतिवर्ष सरकार को कर रूप में अदा करना पड़ता है। बच्चे के जन्म के समय पास पड़ोस के लोग भेंट चढ़ाने आते हैं। अंध विश्वास के कारण लोग बच्चे को सुन्दर और अच्छा नहीं कहते वरन् "छोटा कुत्ता" कहते हैं।

मेलेगासी लोग अतिथि को अपने घर के अग्नि के स्थान के उत्तर की ओर बैठने का स्थान देते हैं। यही स्थान वहां आदर का स्थान माना जाता है। वह अतिथि के लिये सुन्दर चटाई बिछा कर बैठते हैं और चावल तरकारी तथा मांस आदि भोजन देते हैं। सोने के समय सभी एक स्थान पर सोते हैं।

यद्यपि मेडेगास्कर के लोगों के पास घड़ी नहीं होती फिर भी वह अपना कार्य नियत समय पर आरम्भ तथा अंत करते हैं। वह प्रातः काल जल्दी उठते हैं और शाम को जल्दी ही सो जाते हैं।

मेलेगासी लोगों का समय इस प्रकार है। मुर्गा की बांग तीन बजे प्रातः काल होती है उसके बाद लोग उठने लग जाते हैं। काम करने वाले साढ़े पांच बजे चारपाई छोड़ते हैं। ६ बजे सूर्योदय होता है। ठीक दोप-

हर को सूर्य छत के ऊपर आ जाता है। साढ़े पांच बजे शाम को गाय के बच्चे बांध दिये जाते हैं उसी समय पशु चर कर वापस आते हैं। ६ बजे सूर्यास्त होता है। सवा ६ बजे बतख, मुर्गियां आदि घर वापस आती हैं। ७ बजे भोजन (चावल) पकाया जाता है। ८ बजे भोजन का समय होता है। साढ़े आठ बजे भोजन का समय समाप्त हो जाता है और साढ़े ९ बजे सभी लोग सो जाते हैं।

संध्या के समय घर के सभी लोग अग्नि स्थान पर एकत्रित होते हैं। उस समय पिता अथवा घर का वृद्ध बच्चों को कहानियां सुनाता है। पहेलियां आदि भी कही जाती हैं। कुटुम्ब के सभी प्राणी एक दूसरे से बड़ा घनिष्ट प्रेम रखते हैं।

खेल-कूद

मेडेगास्कर के बच्चे भी दूसरे देशों की भाँति खिलाड़ी होते हैं। वह भांति भांति के खेल-कूद में भाग लेते हैं उनके कुछ खेलों का वर्णन इस स्थान पर किया जा रहा है।

१—बैल का खेल—इस खेल में बच्चे एक तगड़े लड़के को बैल मान लेते हैं और उसकी कमर में दो रस्सियाँ बाँधते हैं। एक रस्सी को कुछ लोग आगे की ओर पकड़ते हैं और दूसरी रस्सी पीछे की ओर पकड़ी जाती है। दो रस्सियों का प्रयोग केवल इस लिये होता है जिससे वह आगे पीछे तेज़ी के साथ भाग न सके। बैल इधर उधर झटका देता तथा भागता है और आगे अथवा पीछे तेज़ी के साथ बढ़ने की कोशिश करता है। सभी बच्चे हँसते और उसे रोकने का प्रयत्न करते हैं।

२—सूराख का खेल—मेडेगास्कर के बच्चे सुरंग की भांति सूराख बनाते हैं और फिर उसमें झींगुर, चूहा या कोई दूसरा कीड़ा मकोड़ा एक ओर से डाल देते हैं। भीतर डालने के बाद द्वार बन्द कर देते हैं और जब तक वह दूसरे सूराख से नहीं निकलता उसकी प्रतीक्षा करते रहते हैं। इसी प्रकार यह खेल कुछ समय तक जारी रहता है।

३—घास का पशु—एक बच्चे को मैदान में ले जाकर बच्चे घास से उसके शरीर को सजा कर घास का पशु बनाते हैं। उसके एक पूँछ भी बना दी जाती

है। हाथ के पास घास इस प्रकार रक्खी जाती है कि पशु उसका कोड़ा बना कर दूसरे बच्चों को मार सके।

घास के खिलौने के साथ लड़के खेल रहे हैं।

सभी बच्चे उसकी पूँछ पकड़ कर मरोड़ने का प्रयत्न करते हैं और पशु कोड़ों द्वारा उन्हें मारता है। यदि बच्चे मरोड़ कर पशु को गिराने में सफल होते हैं तो खेल समाप्त हो जाता है। इस खेल को मेडेगास्कर में बिवी-अहिला कहते हैं।

४—लात मारने का खेल—यह खेल १४ वर्ष से ऊपर अवस्था वाले लोग खेलते हैं। दोनों दल के लोग (एक से तीन तक) लात से अपने विरोधी दल वालों को मारने की कोशिश करते हैं। हाथ का प्रयोग करना

बिलकुल मना है। शरीर के किसी भी भाग पर लात मारी जा सकती है। जब कोई व्यक्ति थक कर भाग जाता है अथवा गिर पड़ता है तो पराजित मान लिया जाता है। अब इस खेल का रिवाज कम हो गया है क्योंकि इससे कई मृत्यु हो चुकी है।

इसके सिवा बच्चे मिट्टी के खिलौने बनाने, आम बनाने, लट्टू नचाने और मोटर चलाने का खेल खेलते हैं। मोटर में वह चार पहिया लगाते हैं और दो लड़के तक बैठ सकते हैं। पहिया पत्थर के बनाये जाते हैं।

लड़कों की भांति लड़कियाँ भी खेलती हैं। लड़कियों के खेल में गृहस्थ जीवन और फैम्पिटाहा खेल प्रसिद्ध हैं।

गृहस्थ जीवन का खेल—इस खेल में लड़कियाँ पहले घर बनाती हैं और उसमें सभी स्थान तथा कमरे तयार करती हैं और फिर प्रायः सभी कुटुम्ब जीवन की सामग्री इकट्ठा करके आपस में वह एक कुटुम्ब की सदस्य बन कर अपना खेल खेलती हैं।

फैम्पिटाहा खेल बड़ी लड़कियों का है। यह धान की फसल तयार होने के पश्चात् खेला जाता है। इसमें

दो पड़ोसी गांवों की लड़कियां एक दूसरे के विरुद्ध भाग लेती हैं। वह सुन्दर वस्त्र धारण करके गाती, बजाती और नाचती हैं। बिजयी दल का बड़ा सत्कार होता है।

फानड्रोना (स्नान दिवस) यह खेल उत्साह रूप में बड़ी खुशी तथा तयारी के साथ मनाया जाता था। पहले उसकी निश्चित तिथि २२ नवम्बर थी। उस दिन सभी लोग नहा धोकर अच्छे वस्त्र पहिन कर अधिक से अधिक संख्या में मेडेगास्कर की रानी के महल के द्वार पर जाते थे और उस दिन रानी का वार्षिक स्नान दिवस होता था। रानी सभी उपस्थित जनता पर पानी छिड़कती थी और लोगों को पुरस्कार आदि मिलता था। लोग अपने घरों में सुन्दर भोजन तयार करके खाते थे। संध्या के समय लम्बी लकड़ियों में घास लपेट कर बच्चे मशाल तयार कर अपने गावों का चक्कर लगाते थे। राजधानी का नगर पहाड़ी पर है। वहाँ से सैकड़ों गांवों का यह दृश्य बड़ा ही अनोखा प्रतीत होता था।

अब रानी नहीं हैं इसलिये २२ नवम्बर के स्थान

पर यह उत्सव अब १४ जुलाई को फ्रांसीसी राष्ट्रीय दिवस के दिन मनाया जाता है। मशाल जलाने तथा सुन्दर वस्त्र धारण करने और भोज आदि देने का रिवाज अब भी जारी है।

कहानी

एक स्थान पर एक मनुष्य के सात पुत्र थे। सबसे छोटे का नाम रफरलाही था। वह बड़ा कुरूप था, उसका शरीर दुबला-पतला और निर्बल था। चेहरा तो बड़ा ही कुरूप और भयानक था। उसके दूसरे ६ भाइयों के शरीर सुन्दर, मज़बूत और सुडौल थे। जब उसके माता-पिता का देहान्त हो गया तो रफरलाही पर उसके भाई बड़ा अत्याचार करने लगे और कुरूप होने के कारण उसे बहुत परेशान करने लगे।

अपने भाइयों से परेशान होकर रफरलाही अंद्रिन-नहरी (ब्रह्मा) के स्थान को अपना चेहरा बदलवाने के लिये चल पड़ा। सबसे पहले वह रमनन कंद्रियन नामक जादूगर के पास गया और ब्रह्मा के पास जाने

का हाल कह सुनाया। उसने ब्रह्मा के पास जाने की इच्छा भी प्रगट की। रमनन कंद्रियन ने रफरलाही से सड़क के निरीक्षक रफीवाटो के पास जाने को कहा और कहा कि यात्रा मंगलवार को आरम्भ करो।

रफरलाही रफोवाटो के पास पहुँचा और अपना वर्णन कह सुनाया। रफीवाटो ने कहा ठीक है तुम्हें सिद्ध प्राप्त होगी परन्तु मैं जो कुछ कहूँ उसी के अनुसार काम करना।

आगे पर्वत पार करने पर तुम्हें देवता के ईख के खेत मिलेंगे। तुम उनको मत छूना। दूसरे पर्वत के पार करने पर तुम्हें देवता की सुन्दर मोटी भेड़ों का समूह मिलेगा। तुम्हें भूख प्रतीत होगी परन्तु तुम किसी को न मारना। आगे घाटी पार करने पर तुम्हें नारंगो की बाटिका मिलेगी तुम्हें प्यास भी अधिक प्रतीत होगी परन्तु नारंगियों को तुम मत छूना। उसके आगे एक सुन्दर देव कुआं मिलेगा। तुम उसका भी पानी मत पीना उससे आगे चलने पर तुम्हें ब्रह्मा का स्थान मिलेगा। वहां शायद ब्रह्मा मौजूद न हों उनकी स्त्री होंगी उनसे

नम्रता और शिष्टता पूर्वक प्रणाम करना। पानी मिलने पर कटोरे को हाथ से मत पकड़ना।

रफरलाही ने अपनी यात्रा आरम्भ की और रफीवाटो के कथनानुसार उसे स्थान मिले परन्तु उसने अपने भूक-प्यास की तनिक भी परवाह न की और किसी वस्तु पर हाथ न लगाया। अंत में वह ब्रह्मा के स्थान में पहुँचा। ब्रह्मा की स्त्री से बड़ी नम्रता पूर्वक प्रणाम किया। जब उसके सामने जल का कटोरा आया तो उसने हाथ से नहीं छुआ केवल अपना मुँह फैला दिया पानी उसके मुख में डाल दिया गया।

जब ब्रह्मा आये तो उन्होंने रफरलाही से उसके मार्ग का वर्णन पूछा। रफरलाही ने कहा मुझे ईख के खेत, सुन्दर मोटी भेड़ों का समूह, नारंगी के बाग, सुन्दर सुनहरा कूप तथा स्वच्छ जल और आप के पशु आदि मिले वरन् मैंने किसी पर हाथ नहीं लगाया। इतने में ब्रह्मा की स्त्री बोलीं यहां आकर इसने बड़ी नम्रता के साथ मुझे प्रणाम किया है और पानी देने पर कटोरे पर हाथ नहीं लगाया तब पानी इसके मुँह में डाल दिया गया है। ब्रह्मा उस पर बड़े हर्षित हुये और उसके मुँह को

अपने हाथ से स्पर्श किया। ब्रह्मा के छूते ही उसका शरीर बड़ा ही सुन्दर और सुडौल हो गया। उसका मुखड़ा चन्द्रमा की भाँति चमकने लगा।

उसके पश्चात् रफरलाही घर लौटा। उसे देख उसके भाई बड़े चकित हुये और सारा हाल सुन कर वह भी ब्रह्मा के पास अपना मुखड़ा और अधिक सुन्दर कराने के ध्यान से चल पड़े। जब वह रमनन कंद्रियन के पास गये तो उसने उन्हें बुधवार को यात्रा आरम्भ करने तथा रफीवाटो के पास गये तो उसने मार्ग में पड़ने वाले सभी स्थानों का वर्णन किया और रफरलाही की भांति उन्हें भी समझा दिया।

यात्रा आरम्भ करने पर वह रफीवाटो की बातें भूल गये और ईख के मैदान में पहुँच कर ईख खाई। एक भेड़ को भूख लगने पर मार कर खाया, प्यास लगने पर नारंगियां तोड़ कर खाई। पशुओं पर पत्थर फेंके तथा सुनहरे कूप पर पहुँच कर सुन्दर जल पिया। जब ब्रह्मा के घर पर पहुँचे तो ब्रह्मा की स्त्री से नम्रता पूर्वक प्रणाम नहीं किया और पीने को पानी मांगा। पानी मिलने पर हाथ से जल के कटोरों को उठा जल पी गये।

जब ब्रह्मा लौट कर आये तो पांच भाइयों ने उन्हें नम्रता पूर्वक प्रणाम किया। ब्रह्मा ने उनको देख मार्ग का हाल पूछा। उन्होंने जो कुछ मार्ग में किया था कह सुनाया जब ब्रह्मा ने पूछा यहां पहुँचने पर तुम लोगों ने प्रणाम किया तो ब्रह्मा की स्त्री ने उत्तर दिया इन्होंने प्रणाम नहीं किया और जल देने पर कटोरों को अपने हाथ से उठाकर जल पी गये।

समस्त विवरण सुनकर ब्रह्मा ने एक भाई को मेढक दूसरे को जहरीला मेढक, तीसरे को साँप, चौथे को घड़ियाल और पाँचवे को छिपकली बना दिया। उसके पश्चात् सभी वहां से भगा दिये गये।

द्वीप की खोज

पुर्तगाल के राजा हेनरी चतुर्थ के समय में मेडेगास्कर की खोज की गई। हेनरी ने २०० जहाज़ों का एक बड़ा बेड़ा तयार कराया जिसमें १५ हज़ार व्यक्ति काम करने वाले थे। यह जहाज़ी बेड़ा नये स्थानों की खोज करने के लिये भेजा गया। यह जहाज़ी बेड़ा खोज

लगाता हुआ मेडेगास्कर द्वीप में गया और उसकी खोज की। यह खोज सोलहवीं सदी के आरम्भ में की गई थी। उस समय मेडेगास्कर में कई एक छोटे छोटे राजा राज्य करते थे पर वे दूसरे नवीन खोज किये हुये अफ्रीकन की भाँति असभ्य न थे। खोज लगाने के पश्चात् जहाज़ी बेड़ा लिस्बन लौट आया।

उसके पश्चात् ७० सैनिक मेडेगास्कर में निवास करने के ध्यान से गये। कठिन समुद्री यात्रा के पश्चात् वह मेडेगास्कर के दक्षिणी-पूर्वी तट पर पहुंचे परन्तु पुर्तगालियों की भाषा मेडेगास्कर निवासियों की समझ में नहीं आती थी। मेडेगास्कर के निवासी भी योरुपीय लोगों को देख कर बड़े चकित हुये। बन्दूकों से वे बड़े भयभीत थे।

उस प्रदेश के राजा ने अपने मन्त्रियों से परामर्श किया और कहा कि हम इन लोगों का सामना नहीं कर सकते क्योंकि इनके पास बन्दूकें हैं। उसके वृद्ध लोग गांव से हटा दिये गये।

कुछ समय के पश्चात् योरुपीय और मेडेगास्कर निवासियों में बातचीत होने लगी और एक दिन पुर्त-

गाली सैनिकों ने उनके राजा का स्वागत किया और बतलाया कि वह उनके साथ मिल कर रहना तथा व्यापार करना चाहते हैं। उसके पश्चात राजा ने कहा कि मेरे मन्त्रियों की इच्छा है कि आप लोग हमारा निमन्त्रण स्वीकार कीजिये। पुर्तगाली सैनिकों ने प्रसन्नता पूर्वक निमन्त्रण स्वीकार किया।

निमन्त्रण के दिन बड़ी धूम धाम के साथ तयारी की गई। मेलेगासी जाति के नाच-गान-कला के प्रवीण व्यक्ति बुलाये गये। सभी प्रकार के देशी भोजन तयार किये गये। जब भोजन का समय आया तो दरबार लगा और नोकर-चाकर इधर उधर दौड़ने लगे। गाने वाले अपनी धुन में मस्त थे। नाचने वाली स्त्रियाँ अपनी नृत्य कला का सुन्दर परिचय दे रही थीं। सभी पुर्तगाली सैनिक मुग्ध थे उन्हें घटित होने वाली घटना की तनिक चिन्ता न थी।

एकाएक चारों ओर से मारो-काटो की ध्वनि हुई और पुर्तगाली सैनिकों पर आक्रमण हुआ। ५ व्यक्तियों को छोड़ कर सभी पुर्तगाली मार डाले गये। वह पाँच भी पुर्तगाल लौट कर नहीं गये। इस प्रकार पुर्तगाल

द्वारा नई बस्ती बसाने की प्रथम योजना का दुःखान्त हुआ।

आधुनिक दशा

जून १६४० ई० में फ्रांस के पतन होने के पश्चात् मेडेगास्कर द्वीप की दशा में परिवर्तन हो गया और उसका महत्व बढ़ गया। उसी समय मेडेगास्कर के फ्रान्सीसी गवर्नर ने ब्रिटिश सरकार को तार दिया कि मेडेगास्कर ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिया जावे। तार पर किसी प्रकार की कार्रवाई न हुई और इतने में ही फ्रांस की विची सरकार ने उस गवर्नर को बदल कर मि० बिक्टर अनरे नामक दूसरा गवर्नर नियुक्त कर दिया। इस गवर्नर की बेपरवाही के कारण धुरी सरकारों ने अरबी नावों में अस्त्र-शस्त्र भेजने आरम्भ कर दिये और मूल निवासियों को फौजी शिक्षा दी जाने लगी। जापान ने यहां कुछ सैनिक विशेषज्ञ भी भेज दिये जो देश पर जापान की प्रभुता जमाने लगे।

मलय और बरमा के पश्चात् जब हिन्द महासागर में जापान का सैनिक जहाज़ी बेड़ा दिखाई पड़ा और

बंगाल की खाड़ी तथा हिन्द महासागर में कुछ जहाज़ डुबाये गये तो ब्रिटिश सरकार को भय प्रतीत हुआ कि कहीं फ्रांसीसी इण्डोचीन की भांति मेडेगास्कर पर भी जापान अधिकार न जमा बैठे। मेडेगास्कर पर अधिकार जमाने से जापान को वहाँ का चावल, कहवा, मक्का, सोना, आलू, मूँगफली, शक्कर, तम्बाकू और फास्फेट मिल जाता। इन वस्तुओं की ब्रिटेन को अधिक चिन्ता न थी परन्तु डीगो स्वारेज़, पोर्ट नीवर आदि मेडेगास्कर के सर्वोत्तम बन्दरगाह और पश्चिमी खुश्क भाग के १०० से ऊपर हवाई स्टेशनों पर जापान का अधिकार हो जाने से ब्रिटेन को भारी संकट पहुंचने की आशङ्का थी। मेडेगास्कर से लङ्का, भारतवर्ष और आस्ट्रेलिया केवल साढ़े तीन हज़ार मील दूर है। यहाँ से दक्षिणी अफ्रीका की दूरी ७०० मील और पुर्तगाली पूर्वी अफ्रीका की दूरी २४० मील है।

मेडेगास्कर पर अधिकार होने से जापानी युद्ध-पोत लंका, भारतवर्ष, आस्ट्रेलिया, ईरान, अदन आदि हिन्द महासागरीय राष्ट्रों में बड़ा आतंक मचाते और दक्षिणी अफ्रीका के दक्षिण होकर अटलांटिक सागर से पूर्व की

ओर आने वाले ब्रिटिश तथा अमरीकन जहाज़ों का मार्ग रोक देते तथा उन्हें डुबा कर भीषण हानि पहुंचाते। दक्षिणी अफ्रीका और पुर्तगाली अफ्रीका पर मेडेगास्कर में स्थित जापानी हवाई जहाज़ हवाई आक्रमण बराबर करते रहते। जापान दक्षिणी अफ्रीका पर भी अपनी सेना उतारने तथा अधिकार जमाने का प्रयत्न करता। समस्त हिन्द महासागर संकटमय हो जाता और उसमें मित्र राष्ट्रों के जहाज़ों का चलना ही असम्भव हो जाता। अटलांटिक सागर की ओर भी जापानी युद्ध-पोत बढ़ते। इन्हीं कारणों का अनुमान लगा कर ब्रिटिश सरकार ने मेडेगास्कर पर अपना सैनिक अधिकार जमा लिया।

जब मई १९४२ ई० के आरम्भ में ब्रिटिश जलसेना के कुछ जहाज, विमान, टैंक और ब्रिटिश सेना द्वीप के उत्तरी भाग में पहुँची तो मेडेगास्कर की फ्रांसीसी तथा धुरी राष्ट्रों द्वारा तयार की हुई मूल निवासियों की सेना ने उसका सामना किया। फ्रान्स की विची सरकार ने ब्रिटिश सेना का सामना करने के लिये अपनी सेना को आज्ञा दे दी थी। मेडेगास्कर में फ्रांस की सेना कम थी और फिर वहाँ स्वतंत्र फ्रांस के प्रधान जनरल डी गाले
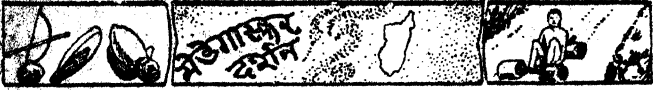
का भी प्रभाव था इस कारण विची सेना ब्रिटिश सेना का सामना नहीं कर सकी और मेडेगास्कर पर ब्रिटिश सेना ने कुछ ही दिनों में अपना सैनिक अधिकार जमा लिया है। ब्रिटिश सरकार ने मेडेगास्कर के भावी निर्णय के लिये स्वाधीन फ्रांस के नेता डि गाले की सम्मति के अनुसार कार्य करने की घोषणा की है।

देश दर्शन

पुस्तकाकार सचित्र मासिक

देश दर्शन ग्रन्थमाला में प्रति मास किसी एक देश का सचित्र सर्वाङ्गपूर्ण वर्णन रहता है। लेख प्रायः यात्रा के आधार पर लिखे जाते हैं। आवश्यक नक़शों और चित्रों के होने से देश-दर्शन का प्रत्येक अंक पढ़ने और संग्रह करने योग्य होता है।

मार्च १९३९ से मई १९४२ तक देश-दर्शन के नीचे लिखे अङ्क प्रकाशित हो चुके हैं :—

लंका, इराक, पैलेस्टाइन, बरमा, पोलैंड, चेकोस्लोवेकिया, आस्ट्रिया, मिस्र भाग १, मिस्र भाग २, फिनलैण्ड, बेल्जियम, रूमानिया, प्राचीन-जीवन, यूगोस्लैविया, नार्वे, जावा, यूनान, डेनमार्क, हालैंड, रूस, थाई (श्याम) देश, बलगेरिया, अलसेस लारेन, काश्मीर, जापान, ग्वालियर, स्वीडन, मलयप्रदेश, फिलीपाइन, तीर्थ दर्शन, हवाई द्वीपसमूह, न्यूज़ीलैंड, न्यूगिनी, आस्ट्रेलिया। चौथे वर्ष का प्रथम अङ्क मेडेगास्कर, द्वितीय अङ्क न्यूयार्क अगस्त का अङ्क होगा।

एक प्रति ।≈) वार्षिक मूल्य ४)

उपर्युक्त सब पुस्तकों का मूल्य १२) है। भूगोल के ग्राहकों को ये पुस्तकें १०।।) रुपया आने पर भेज दी जायँगी।

मैनेजर, "भूगोल"-कार्यालय, कक्करहाघाट, प्रयाग।